an>

Title : Regarding railway freight system.

**श्रीमती कृष्णा राज (शाहजहाँपुर):** अधिष्ठाता महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय पर बोलने का अवसर प्रदान किया।

मान्यवर, मेरे संज्ञान में एक महत्वपूर्ण विषय आया है जो कि रेलवे से संबंधित है। वर्तमान में रेलवे द्वारा बड़ी मात्रा में जो माल ढुलाई के लिए भेजा जा रहा है, वह एजेंटों के माध्यम से भेजा जा रहा है। जनपद शाहजहांपुर में रोजा में फोरवेज लॉजेस्टिक ट्रांसपोर्ट एजेंसी के नाम से काम किया जा रहा है। यह व्यवस्था मात्र दो-ढाई वर्ष पूर्व कथित स्वार्थ पूर्ति के लिए चन्द लोगों ने सांठ-गांठ कर देश में लागू करवाई थी। इसके अंतर्गत देश में चार एजेंट कार्य कर रहे हैं। इस व्यवस्था के लागू होने के बाद से अरबों रुपये का चूना रेल मंत्रालय को लगा है। इस तथ्य की पुष्टि गत वित्तीय वर्ष के तुलनात्मक अध्ययन से की जा सकती है। यह एजेंट बिना कोई कार्य किए, जो माल स्वतः आ जाता है, उसे अपने माध्यम से भेज देते हैं और 30 प्रतिशत कमीशन ले लेते हैं। व्यापारी कुछ न कहें और मुहँ बंद रखें इसलिए उसे भी प्राप्त कमीशन में से कुछ हिस्सा दे देते हैं। उदाहरण के लिए यदि किन्हीं व्यापारियों ने मिलकर एक रैक लोड की और उसका किराया 75 लाख रुपये बनता है तो उस पर रेलवे विभाग एजेंट को लगभग 25 लाख रुपये फ्री का दे देता है और व्यापारियों को लगभग 4 लाख रुपया मिल जाता है। इस धन का कुछ लोगों के बीच बंदरबांट हो जाता है, इसलिए सभी चुप हैं। इससे रेलवे विभाग को क्षति हो रही है।...(व्यवधान)

**माननीय सभापति :** आपका विषय आ गया है, कृपया आप समाप्त कीजिए।

**श्रीमती कृष्णा राज :** मान्यवर, मेरा अनुरोध है कि एजेंटों की इस व्यवस्था को समाप्त किया जाए और पूर्व में जो व्यवस्था चल रही थी, उसको पुनर्जीवित करने का कार्य करें ताकि भारतीय रेलवे को अरबों रुपये का जो चूना लग रहा है, उसको बचाया जा एके। यही हमारा आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध है।

MR. CHAIRPERSON : The House stands adjourned to meet again tomorrow, the 15th July, 2014 at 11 a.m.

**20.47 hrs**

*The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock*

***on Tuesday, July 15, 2014/Ashadha 24, 1936 (Saka).***

---

* ग़्दद्य् द्बड्ढहद्दद्बड्डड्डढड्ड.

* ग़्दद्य् द्बड्ढहद्दद्बड्डड्डढड्ड.

* ग़्दद्य् द्बड्ढहद्दद्बड्डड्डढड्ड.

* ग़्दद्य् द्बड्ढहद्दद्बड्डड्डढड्ड.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठद्म् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* Edथ्त्र्ण् ह्ल्ठ्ठदथ्ठथ्त्द्दद द्दढ ण्ड्ढ म्द्रड्ढड्ढहण् द्दद्धश्त्द्दठ्थ्न् ड्डड्ढथ्त्ध्ड्ढद्धड्ढड्ड त्द घ्द्वदठ्ठडत्.

* ग्द्दद्य् द्धड्ढहद्दद्धड्डड्ढड्ड.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

*** च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.**

*** च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.**

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* च्द्रड्ढड्ढहण् ठ्ठघ् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ थ्ठडथ्ड्ढ.

* Edथ्त्द्मर्ण् थ्द्धठ्ठदथ्ठथ्स्त्द्दद द्दढ ण्ड्ढ म्द्रड्ढड्ढहण् द्दद्धश्त्दठ्ठथ्ध्र् थ्ठत्ड्ड द्दद ण्ड्ढ ठ्ठडथ्ड्ढ त्द ठ्ठर्त्थ्.

* ग़्द्दय् द्धड्ढहद्दद्धड्डड्ढड्ड.

* Edथ्त्द्मर्ण् थ्द्धठ्ठदथ्ठथ्स्त्द्दद द्दढ ण्ड्ढ च्द्रड्ढड्ढहण् द्दद्धश्त्दठ्ठथ्ध्र् ड्डड्ढथ्त्थ्ड्ढद्धड्ढड्ड त्द एम्ठ्ठर्ढम्ड्ढ.